

पीयूषभानु/पीयूषरुचि पुं. (तत्.) चंद्रमा।

पीयूषवर्ष वि. (तत्.) 1. अमृत की वर्षा करने वाला
2. चंद्रमा 3. कपूर 4. कवि 'जयदेव' की उपाधि;
छंद- एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण
में 19 मात्राएँ होती हैं जिसमें 10-9 पर यति
होती है तथा अंत में लघु-गुरु होते हैं।

पीर स्त्री. (तद्.) पीड़ा, व्यथा, कष्ट।

पीर पुं. (फा.) 1. वयोवृद्ध व्यक्ति 2. सिद्ध पुरुष,
धर्मगुरु 3. सोमवार स्त्री. पीर की पत्नी।

पीरक वि. (तद्.) 1. पीड़ा पहुँचाने वाला 2. दूसरे
की पीड़ा समझने वाला।

पीरजादा पुं. (फा.) धर्मगुरु का पुत्र।

पीरना स.क्रि. (देश.) कोल्हू में पेरना।

पीरा स्त्री. (देश.) पीड़ा वि. (तद्.) पीला

पीरिया पुं. (देश.) मूर्तियाँ बनाने के काम में आने
वाला पीले रंग का कोमल पत्थर।

पील पुं. (फा.) 1. गज, हाथी 2. शतरंज का एक
मोहरा।

पीलक वि. (देश.) पीलापन स्त्री. 1. मैना के आकार
की एक चिड़िया जिसका रंग सोने जैसा पीला
होता है 2. एक अन्य चिड़िया जिसका रंग सोने
जैसा चमकीला, पंख काले रंग के, चोंच गुलाबी
रंगी की, आँखें गहरी लाल और दुम काले रंग
की होती है जिसकी ध्वनि कभी 'बाँसुरी' जैसी
मीठी होती है और कभी 'क्वाक' जैसी कर्कश।

पीलकिया स्त्री. (देश.) एक क्षीणकाय प्रवासी चिड़िया
जो धूसर और पीले रंग की होती है, इसकी लंबी
पूँछ अनवरत रूप से ऊपर-नीचे होती रहती है।

पीबान पुं. (फा.) महावत।

पीला वि. (तद्.) पीत, सुवर्ण/हल्दी के रंग का; मुहा.
पीला पड़ना- शरीर में खून की अल्पता होना,
अत्यधिक डर जाना, आभारहित या कांतिरहित
होना प्रयो. पीलाचंदन- पीले रंग का चंदन,
हरिचंदन।

पीलिया स्त्री. (देश.) खून का एक रोग जिसमें
त्वचा और आँखों में पीलापन हो जाता है,
पांडुरोग, कामला रोग। jaundice

पीली वि. (तद्.) पीले रंग की प्रयो. पीली चमेली,
पीली जूही, पीली मिट्टी।

पीलू पुं. (तद्.) मंद सुगंध वाला एक वृक्ष जो भूमि
में लेटा हुआ ऊपर की तरफ बढ़ता है।

पीव पुं. (तद्.) प्रियतम, प्रिय, पति।

पीवन पुं. (देश.) पीना, पान करना।

पीवर वि. (तत्.) 1. विशाल, दीर्घकाय 2. मोटा 3.
परिपुष्ट, हृष्टपुष्ट।

पीवरी स्त्री. (तत्.) 1. युवती 2. गाय।

पीसना स.क्रि. (तद्.) किसी कड़ी/ठोस वस्तु का
रगड़कर या दबाव देकर चूर्ण बनाना जैसे-
अनाज पीसना ला.अर्थ. नाजियों ने अपने दुश्मनों
को बर्बरता से पीसा मुहा. पीस कर पी जाना-
पूरी तरह बर्बाद कर देना; पीस डालना- तहस-
नहस कर डालना; पीसे को पीसना- किसी किए
हुए काम को दुबारा करना, दुःखी व्यक्ति को
और दुःखी करना, पीड़ित व्यक्ति को और
अधिक पीड़ित करना।

पीहर पुं. (तद्.) मायका, विवाहिता स्त्री का अपने
माता-पिता का घर।

पीहा-पीहा स्त्री. (अनु.) पपीहा पक्षी की ध्वनि पी-
पी की ध्वनि।

पुंकेसर पुं. (तत्.) वन. फूलों का परागकोष तथा
तंतु से बनी संरचना जिसमें पराग होता है।

पुंख पुं. (तत्.) बाण/तीर का वह भाग जिसमें पर
लगे होते हैं।

पुंखानुपुंख क्रि.वि. (तत्.) 1. पूरी तरह से, पूर्ण
रूप से 2. एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

पुंखित वि. (तत्.) 1. पुंखयुक्त, जिसमें पर लगे
हों।

पुंग पुं. (तत्.) 1. राशि, ढेर 2. समूह, झुंड।